RCSA INDIA CUTTING AND TAILORING BOOKS

पुस्तक वार्ता

आज के इस फैशन के युग में प्रत्येक महिला व गृहिणी को सिलाई का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। इससे धन की बचत तो होती ही है, साथ ही हम अपनी पसन्द के वस्त्र भी पहन सकते हैं। सिलाई कार्य हेतु सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करके रखना चाहिए। सिलाई का ज्ञान व्यावसायिक रूप से भी दिया जाता है। इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं भी बहुत अधिक हैं।

आज देश भर में रेडीमेड कपड़ों की असंख्य फैक्ट्रियां चल रही हैं। इनमें सिलाई-कटाई आदि कामों के लाखों कारीगर दिन-रात शिफ़्टों में काम कर रहे हैं। भारी मात्रा में रेडीमेड गार्मेंट्स विदेशों में निर्यात होते हैं। अब तो घर-घर में सिलाई का काम हो रहा है। महिलाएं फैक्ट्रियों से काम लाती हैं और सिलाई करके लौटा देती हैं

किसी भी काम को करने से पहले उसका प्रारंभिक ज्ञान होना जरूरी होता है। टेलरिंग का आरंभिक ज्ञान ही अपूर्ण होगा, तो सिलाई कार्य उचित ढंग से करना कठिन ही नहीं, अपितु असंभव हो सकता है।

घरेलू सिलाई प्रायः मरम्मत, रफ़ू, कपड़ों को ठीक करना तथा बच्चों के कपड़ों से संबंधित होती है। इसके लिये उचित साधन, उचित कपड़े और उचित तरीके का ज्ञान होना बहुत जरूरी है। पहले सिलाई-कटाई का ज्ञान आजकल के समान नहीं था, इसका विकास धीरे-धीरे होता रहा है। युगों-युगों में भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्रों में कुछ-न-कुछ अन्तर रहता है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व और आधुनिक युग के वस्त्रों में भी काफी अन्तर है। यह अन्तर विकास की देन है।

भोजन, आवास तथा जल की भांति वस्त्र भी मानव की एक आवश्यकता है। प्राचीन युग से ही मानव शरीर को मौसम के प्रभाव से बचाने हेतु विविध प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करता रहा है। संभव है कि

इसी काल में उसने सिलाई कला का भी आविष्कार किया होगा। पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि आज से लगभग 5000 वर्ष पहले सिलाई कला का आविष्कार हुआ था। प्राचीन युग में मानव फर, वृक्ष की छाल, वृक्ष की पत्तियों या फिर जानवरों की खाल को एक साथ जोड़ने के लिए सिलाई कला को व्यवहार में लाता था।

हमारे देश में प्रादेशिक सरकारें हर स्तर पर, इस व्यवसाय एवं कला को प्रोत्साहन देने के लिए लगातार प्रशिक्षण संस्थायें खोल रही है। स्कूल-कॉलेज में भी कटिंग-टेलरिंग विषय की शिक्षा दी जाती है। आई. टी. आई. में इसके लिए अलग विभाग होता है। महिला कल्याण संस्थाएं और अन्य एन.जी.ओ, महिलाओं की आर्थिक स्थिति मज़बूत करने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करती हैं और रोज़गार भी मुहैया करवाती हैं। निश्चित रूप से आम जनता एवं जरूरतमन्द व्यक्ति तथा महिलायें लाभ उठाते हुए कटाई एवं सिलाई कला को एक व्यवसाय के रूप में अपना रहे हैं।

मानव की शारीरिक बनावट चाहे एक सामान्य श्रेणी की क्यों न हो परन्तु पोशाक के द्वारा सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी प्रभावशाली एवं आकर्षक लगने लगता है। जो कि सिलाई की कला पर पूर्ण रूप से निर्भर करता है। अतएव किसी ने ठीक ही कहा God makes a man but Tailor makes him a gentleman.

अर्थात्, ईश्वर तो मानव को बनाता है, लेकिन टेलर (सिलाई-कला मास्टर) उसे सज्जन एवं प्रभावशाली व्यक्ति बना देता है।

यह पुस्तक **पी.एम. होम टेलरिंग कोर्स** इन्हीं सब तथ्यों को मद्देनज़र रखकर प्रकाशित की गई है। यह समग्र रूप से एक प्रैक्टिकल गाइड है, जिसे पढ़कर, अभ्यास करके सचमुच आप परफेक्ट् टेलरमास्टर बन सकते हैं और महिलाएं अपने आप को सिलाई-कटाई में मज़बूत बनाकर नाम कमा सकती हैं।

पाठ्य-क्रम

1. परिचय बोध ... 7

सिलाई कला का आविष्कार • पोशाक का महत्त्व • सिलाई का ढंग • सिलाई के प्रकार • आवश्यक साधन

2. तकनीकी ज्ञान ... 13

उपकरण एवं सहायक साज-सज्जाएं • नाप लेने के उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा • ड्राफ्टिंग उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा • कटाई के उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा • प्रेस करने के उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा • सिलाई मशीन एवं उसके भाग • मानव शरीर की संरचना का अध्ययन, वयस्क पुरुषों की शरीर रचना और वस्त्र • वयस्क स्त्रियों की शरीर रचना और वस्त्र • असामान्य शरीर रचना व वस्त्र • मानव शरीर जोड़ एवं मांसपेशियां •नाप लेते समय की सावधानियां एवं सामान्य नियम • शरीर के नीचे के वस्त्रों की नाप • विभिन्न कपड़ों का अर्ज व पोशाकों में लगने वाला कपड़ा • विभिन्न पोशाकों में लगने वाले वस्त्रों का अनुमान लगाने का तरीका • प्रारंभिक सिलाइयां एवं टांके • प्रारंभिक या बुनियादी टांकों के प्रकार • विभिन्न प्रकार के काज • काज बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें • बटन, हुक्स और कड़ियां • जिप,धागे के लूप • कपड़े की कटिंग करना • पैट्रन का चिन्ह • कपड़ा काटना • जेबें, कलियां • चुन्नटें, वस्त्रों के लिए विभिन्न सजावटी सामान • इलास्टिक • वस्त्रों की मरम्मत • टेलरिंग-कटिंग में प्रयुक्त शब्दावली।

3. बच्चों के वस्त्र ... 159

स्लैक्स • सादा फ्रॉक • झबला • वन पीस प्लीटेड बेबी फ्रॉक • अम्ब्रेला फ्रॉक • ए शेप फ्रॉक • कटाई 'ए शेप' फ्रॉक • शलवार • कमीज तथा कुर्ता • टापनुमा कुरता • गरारा तथा शरारा सूट।

4. महिलाओं के वस्त्र ... 186

सादा ब्लॉउज • लुंगी सूट • अँगिया (चोली) • ब्रेजियर (नमूना) • पेटीकोट • नाइट सूट • टॉप • स्लीवलैस नाइट गाउन • मिनी ड्रेस • मिनी ड्रेस सैक डिजाइन वाली • मैक्सी • अम्ब्रेलाकट वाली लेयर मैक्सी • कमर पर इलास्टिक चुन्नटवाली वनपीस मैक्सी • चुन्नटोंवाली सादा मैक्सी • स्कर्ट मैक्सी • 'ए' शेप तथा कलीदार स्कर्ट-मैक्सी • चुन्नटदार स्कर्ट मैक्सी • अम्ब्रेला कट की लेयर स्कर्ट मैक्सी • लेयर कोट • लेडीज हाफ कोट • कैप कॉलर लेडीज डबल ब्रेस्ट लांग कोट • लेडीज डबल ब्रेस्ट लांग कोट • विभिन्न प्रान्तीय पोशाकें।

5. पुरुषों की पोशाकें ... 235

बैल बॉटम पैन्ट • कलीदार कुर्ता • नेहरू कुर्ता • बंगाली कुर्ता • गांधी कट टोपी • शर्ट (कमीज) • पैन्ट • सामान्य पैन्ट • बेडौल नाप वाली पैन्ट • जॉकेट • नेहरू जॉकेट • जिप कॉलर वाली चुन्नटदार जॉकेट • सादा पाजामा • चूड़ीदार पाजामा • शेरवानी • जाँघिया या अन्डरवीयर।

Sample Pages

सिलाई किट

आज के युग को फैशन का युग कहना अतिशयोक्ति न होगा, अतएव इस युग में सिलाई की बढ़ती हुई दरों को देखते हुए यह जरूरी है कि गृहिणी को सिलाई कला का ज्ञान हो, जिससे कि वह धन की बचत कर सके। सिलाई करने में सुविधा हो, इसके लिए उसे सिलाई सम्बन्धी महत्वपूर्ण व आवश्यक सामग्री को एकत्र करके रखना ही **सिलाई किट** तैयार करना है। यह किट एक थैले अथवा एक डिब्बे के रूप में हो सकती है।

सिलाई किट में अग्रलिखित सामग्री का होना अति आवश्यक है–

(1) छोटी कैंची, (2) बड़ी कैंची, (3) सूइयां मशीन की व हाथ की, (4) इन्चीटेप, (5) अंगुलीस्ताना, (6) स्कवायर, (7) धागा, (8) मिल्टन चाक, (9) एम्ब्राइडरी फ्रेम, (10) पेंसिल-रबर, (11) ड्रेसिंग व्हीलर, (12) डिजाइन बुक, (13) मोम मोटे कपड़े के लिए, (14) कटिंग की बुक, एवं (15) मिल्टन क्लॉथ।

नाप लेने के उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा
(Measuring Tools and Equipments)

व्यवसाय कटिंग-टेलरिंग में नाप लेने हेतु कुछ उपकरणों एवं सहायक साज-सज्जा की जरूरत पड़ती है। इन उपकरणों में से कुछ उपकरण तो इतने जरूरी होते हैं। कि उनके बिना कार्य करना संभव नहीं होता है, जबकि कार्य को पूरा करने में सुगमता एवं शीघ्रता से सुन्दर कार्य करने हेतु सहायक साज-सज्जा प्रयोग में लायी जाती है। इस तरह व्यवसाय कटिंग-टेलरिंग में नाप लेने के लिए अधोलिखित उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा इस्तेमाल की जाती है :

इन्ची-टेप
(Measuring Tape)

कटिंग-टेलरिंग जगत में इन्ची-टेप एक उपकरण है, जो उत्तम किस्म के लिनेन कपड़े का बना एक प्रकार का फीता है। इसकी लम्बाई सामान्य रूप से: 60 इन्च या 152 सेन्टीमीटर होती है। इसके दोनों ओर सेन्टीमीटर तथा इन्च के चिन्ह लिखे होते हैं। यह कपड़ा नापने या शरीर का नाप लेने के काम आता है। फीते की चौड़ाई इन्च के आठ भाग में से पांच भाग अर्थात् पांच इकाइयों के समान होती है जिसके एक सिरे पर 3 इन्च लम्बी और दूसरे सिरे पर 1/2 लम्बी पीतल या एल्यूमीनियम की पत्ती लगी होती है। इन्च-टेप के सिरों पर लगी इन पत्तियों के मुख्य दो उद्देश्य होते हैं जो निम्नलिखित हैं :

चित्र : इन्ची-टेप

1. इन्च-टेप के सिरों पर लगी पत्ती से पैन्ट, पायजामा, निकर आदि की गिदरी (टांग के मध्य भीतरी भाग) की माप लेने में आसानी होती है।
2. नाप लेने के उपरान्त इसको लपेटने तथा रखने में आसानी होती है।

इन्ची-टेप टेलरिंग व्यवसाय में एक मौलिक मापी उपकरण है, अतएव नापने के उपकरणों में यह सबसे ज्यादा उपयोगी एवं एक मात्र जरूरी उपकरण है।

सी.पी.जी. मेजरिंग टेप
(C.P.G. Measuring Tape)

सी.पी.जी. मेजरिंग टेप एक विशेष प्रकार का आविष्कारिक टेप होता है। इस टेप का इस्तेमाल विशेषकर कोट की माप लेने हेतु किया जाता है और इस टेप की मदद से एक बार में ही तीन मापे ली जा सकती हैं (1) चैस्ट माप (2) तीरे की माप एवं (3) डैप्थ ऑफ साइड की माप। इसके अतिरिक्त over shoulder एवं under shoulder भी इसके द्वारा मापे जा सकते हैं।

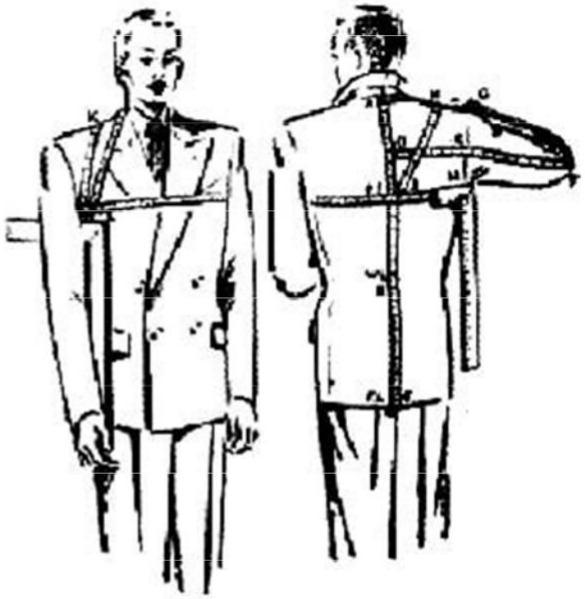

चित्र : सी.पी.जी. मेजरिंग टेप

गिदरी मापक
(Leg Measuring)

इस मापक द्वारा टांग के अदंर के भाग की नाप ली जाती है। इसका आकार अर्धचन्द्राकर होता है, जो लकड़ी का बना होता है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है। गोलाई के मध्य में इंच टेप लगा होता है। इस उपकरण के गोलाई वाले भाग को टांग में फंसा कर गिदरी की माप ली जाती है। इस उपकरण के प्रयोग का सबसे अधिक महत्त्व यह है कि इसके प्रयोग द्वारा नाप लेने में व्यक्ति के शरीर को छुए बिना ही सही व वांछित माप ली जा सकती है।

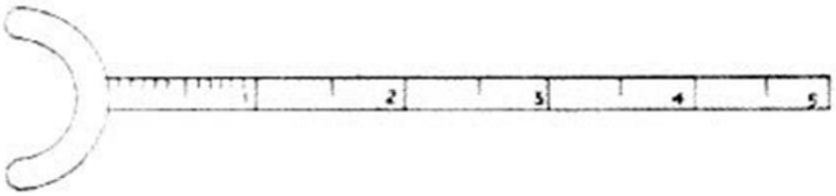

चित्र : गिदरी मापक

मेजरिंग स्टैन्ड
(Measuring Stand)

मेजरिंग स्टैन्ड एक स्टैन्डनुमा मापक उपकरण होता है जिसे व्यक्ति के लम्बे वस्त्रों जैसे ओवर कोट, लेडिज कोट एवं गाऊन आदि को नापने हेतु इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा इस उपकरण द्वारा घेरे वाले वस्त्रों का फलेयर चैक करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। इस उपकरण की बनावट स्टैन्डनुमा होने के कारण इसमें एक एल्यूमीनियम

चित्र : मेजरिंग स्टैन्ड

की रॉड एक स्टैन्ड पर लगायी जाती है और इस रॉड पर इंची-टेप की भांति चिह्न या निशाना लगे होते हैं जिससे जरूरत के अनुसार ग्राहक की लम्बाई मापी जाती है।

मीटर
(Meter)

मीटर लोहे की बनी एक रॉड होती है जिसका अधिकांश प्रयोग कपड़े विक्रेताओं द्वारा किया जाता है। प्रारंभ में यह एक गज के रूप में प्रचलित था क्योंकि उस समय इस पर इन्चों के निशान होते थे और यह तीन फीट अर्थात् 36 इन्च लम्बा होता था, लेकिन आज के दौर में मीट्रिक प्रणाली के अनुसार इसकी लम्बाई 100 सें.मी. होती है। जो कि गज से अधिक लम्बी होती है।

0	10		20		40		60	80		100

चित्र : मीटर रॉड

ड्राफ्टिंग उपकरण एवं सहायक साज-सज्जा
(Drafting Tools and Equipments)

सिलाई कला के क्षेत्र में जिन उपकरणों एवं साज-सज्जा का प्रयोग कपड़े को काटने से पहले ड्राफ्टिंग बनाने के लिए किया जाता है, वे निम्नलिखित हैं :

'एल' स्केल
('L' Scale)

इसका प्रयोग ड्राफ्टिंग तैयार करने के लिए किया जाता है। इसे गुनिया के नाम से भी जाना जाता है। इसकी एक ओर की लम्बाई 16 सेन्टीमीटर और दूसरी ओर 30 सेन्टीमीटर होती है। विविध आकार के कपड़े काटने में इसका इस्तेमाल किया जाता है। यह लकड़ी अथवा लोहे का बना **'L'** आकृति का उपकरण होता है जिसकी एक भुजा 12 इन्च तथा दूसरी भुजा 24 इन्च लम्बी होती है। इसकी भुजाओं पर इंच तथा सें. मी. दोनों इकाइयों में निशान लगे होते हैं। वैसे प्राचीन समय में इस पर केवल इंच में ही निशान लगे होते थे। टेलरिंग व्यवसाय में लकड़ी का बना 'L' स्केल आमतौर पर प्रयोग में लाया जाता है। प्रशिक्षार्थी इसका प्रयोग ब्लैड बोर्ड या ब्राऊन पेपर तथा मिल्टन क्लॉथ पर ड्राफ्टिंग अभ्यास के लिए करते हैं। इसके द्वारा एक साथ लम्बाई एवं चौड़ाई की रेखायें **90°** के कोण पर खींची जा सकती हैं। इसके अलावा इसके मध्य

विभिन्न प्रकार के काज
(Various Type of Button Hole)

सर्वविदित है कि मानव शरीर एक-सी बनावट और नाप का नहीं बना होता है अपितु मानव शरीर के विभिन्न अंगों की भिन्न-भिन्न बनावट होती है। अतएव हम वस्त्र को तैयार करते समय शरीर की बनावट के आधार पर वस्त्र को बनाने और शरीर पर उसकी फिटिंग देने के लिए अनेक विधियों को व्यवहार में लाते हैं जिसके अंतर्गत कहीं से वस्त्र को छोटा तो कहीं से बड़ा और कहीं से बन्द तो कहीं से खुला रखते हैं। फिटिंग प्रदान करने के उद्देश्य से और वस्त्र के छोटे भाग को शरीर के बड़े भाग में स्थिति अनुकूल पहनने के लिए वस्त्र में खुलापन रखते हुए पट्टी भी लगाई जाती है जिस पर जरूरत के अनुसार बटन, हुक, प्रेस बटन, हुक आई आदि लगाए जाते हैं और पहनने के पश्चात् इन्हें बन्द किया जा सकता है और वस्त्र को शरीर से उतारने के लिए बटन हुक आदि को खोलकर आसानीपूर्वक उतारा भी जा सकता है। अतः वस्त्रों में बटन, पट्टी, कफ आदि पर बटन लगाने हेतु एक विशेष स्टिच युक्त छिद्र निर्मित किया जाता है जिससे बटन को उस छेद में टांक कर बन्द करने में सहायता मिलती है अर्थात् वस्त्र को तैयार करते समय उसमें जरूरत के अनुसार खुलापन रखने तथा खुलेपन को इच्छानुसार बन्द करने या खोलने के लिए युक्ति के रूप में वस्त्र में बटन आदि लगाने के लिए जो छेद बनाए जाते हैं, इसको बनाने तथा सजाने का ज्ञान भी कपड़ा कटिंग मास्टर को होना बहुत जरूरी होता है जिससे वह बटन होल को सुन्दरता के साथ बना कर वस्त्र की सुन्दरता को आकर्षक बना सके।

ध्यान दें—

'काज' काज-पटी पर कटे हुए उस भाग को कहा जाता है जिसके किनारों पर चारों तरफ काज स्टिच से पक्का करके तैयार किया जाता है और जिसका इस्तेमाल वस्त्र के बटन को बन्द करने के लिए किया जाता है।

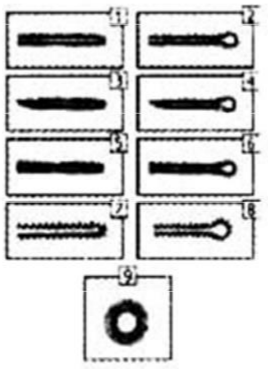

चित्र : विभिन्न प्रकार के काज

काज बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें
(Attention in the Making of Button Hole)

किसी वस्त्र या पोशाक में काजों को बनाने से पहले एवं काजों को बनाते समय निम्नलिखित तथ्यों व नियमों को विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए–

1. सबसे पहले वस्त्र में काज बनाने के लिए काज के निशान एक समान दूरी पर पेंसिल या टेलर चॉक द्वारा मार्क कर देना चाहिए।
2. पोशाक या वस्त्र के भागों के अनुसार जैसे बटन होल पट्टी तथा आस्तीनों के कफ या अन्य हिस्सों में समानता रखते हुए बराबर दूरी पर काजों को निर्मित करना चाहिए।
3. वस्त्र में काज सदैव काज पट्टी के बीचों-बीच बने होने चाहिए।
4. काज की लम्बाई बटन की चौड़ाई और एक चौथाई इंच (बटन की चौ. 4¼ इंच) के बराबर लेनी चाहिए।
5. काज सदैव डबल पट्टी अर्थात् दोहरी पट्टी पर बनाया जाना चाहिए।
6. वस्त्र में पट्टी की सिलाई करते वक्त उसमें बुकरम या लट्ठा के कपड़े की तह अच्छी प्रकार से लगाई जानी चाहिए।
7. काज का चिरागी वाला भाग ऊपर की तरफ और थोक वाला भाग नीचे की तरफ होना चाहिए। अगर काज को आड़े रूप में निर्मित करना हो तो गोलाई वाला भाग बाहर की तरफ आगे की ओर तथा थोक वाला भाग अन्दर की ओर होना चाहिए।
8. काज की स्टिचिंग (Button Hole Stitching) सदैव 8 नम्बर के धागे या धागे को बटकर बनाना चाहिए।

काज के प्रकार
(Types of Button Hole)

मुख्यतः काज निम्न दो प्रकार के होते हैं, जो निम्नवत हैं–

I. हाथ द्वारा निर्मित काज (Hand Made Button Hole)

II. मशीन द्वारा निर्मित काज (Machine Made Button Hole)

I. हाथ द्वारा निर्मित काज (Hand Made Button Hole) : यह काज पूर्णतया हाथ द्वारा स्टिचिंग

करके बनाया जाता है। इस प्रकार से काज को बनाने में मशीन की कोई भूमिका नहीं होती है। ये काज निम्न प्रकार के होते हैं–

1. सादा काज (Plain Button Hole) : ऐसे काजों को उरमान करके काज स्टिच से पक्का कर के तैयार किया जाता है। इन काजों की लम्बाई आमतौर पर कम तथा सामान्य तौर पर 2 से 3 प्वाइंट की लम्बाई में बने होते हैं। ऐसे काजों का इस्तेमाल तथा निर्माण कम्बीनेशन सूट, कमीज, कुर्ता, बुशर्ट इत्यादि वस्त्रों व पोशकों में किया जाता है। इसके गोलाईदार भाग को चिरागी तथा दूसरे भाग को ठोका के नाम से जाना जाता है।

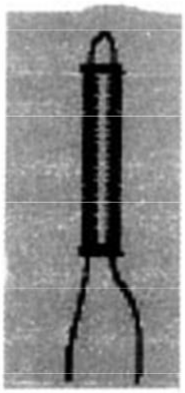

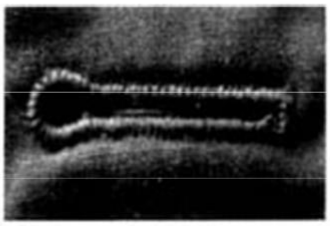

चित्र : सादा काज

2. बड़ा काज (Big Button Hole) : आम तौर पर ऐसे काजों का निर्माण कोट-पैंट, सफारी-सूट आदि वस्त्रों में किया जाता है। पैंट तथा सफारी सूट आदि में काज की लम्बाई 1/2 इंच (आधा इंच) से लेकर 5 प्वाइंट तक और कोट में 5 प्वाइंट से लेकर 7 प्वाइंट तक रखी जाती है। ऐसे काजों को काटने के उपरान्त उरमाना करके बर्ताना किया जाता है और बर्ताना करके काज स्टिच के फंदों द्वारा इसे पक्का कर दिया जाता है। ऐसे काज को बाउंड बटन होल (Bound Button Hole) भी कहा जाता है। जैसा कि नीचे के चित्र में दर्शाया गया है।

चित्र : बड़ा काज

3. कपड़े द्वारा निर्मित काज (Cloth Made Button Hole)—आम तौर पर ये काज कोटों पर निर्मित किये जाते हैं और जिस स्थान पर इन काजों का निर्माण किया जाता है, उसी स्थान पर उसी कोट के कपड़े का औरेब कपड़ा लेकर सीधी ओर रखकर काज के साइज के अनुसार चिन्ह लगातार दोनों से 2. 2 प्वाइंट की दूरी पर सीधा बखिया लगातार संबद्ध कर दिया जाता है। उसके उपरान्त काज के लिए लगाए गए चिन्ह से कपड़े को काटकर औरेब कपड़े को उल्टी तरफ उलटकर फिर काज की चौड़ाई के आधार पर काज के किनारों पर धांसा कर दिया जाता है। तत्पश्चात् उल्टी ओर से अतिरिक्त या फालतू कपड़े को काटकर हटा दिया जाता है। ऐसे काज मशीन की मदद से निर्मित किये जाते हैं। जैसा कि नीचे के चित्र में दर्शाया गया है।

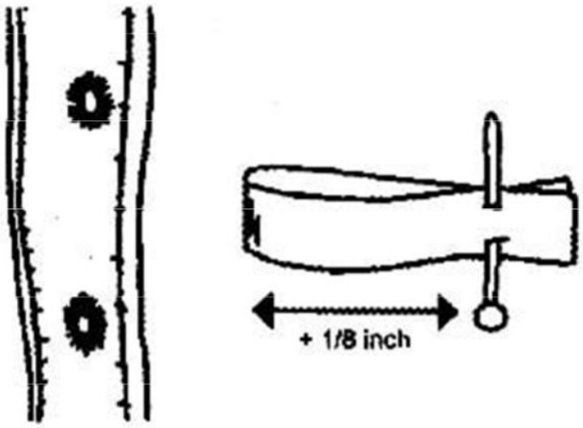

चित्र : कपड़े द्वारा निर्मित काज

4. कपड़े लूप्स द्वारा निर्मित काज (Button Hole Made by Clothing Loops) : प्रायः ऐसे काजों का निर्माण स्त्रियों एवं बच्चों के वस्त्रों पर सुन्दरता लाने के लिए किया जाता है। जिस वस्त्र में ये काज बनाने हो उसी वस्त्र के लिए प्रयोग किए गए कपड़े में से औरेब पट्टी लेकर दोहरा करके जुड़े भाग की ओर से दो प्वाइंट की दूरी लेकर बखिया लगा दें। उसके पश्चात् सूई धागे की मदद से लूप्स को सीधा कर दें तथा बटन की चौड़ाई के आधार पर लूप्स काटकर काजों के स्थान पर गोलाई के आकार में जोड़ दें।

टिप्पणी : सबसे पहले नं. 11-12 और 9-8 का आमने-सामने वाला आसन का भाग जोड़ें फिर नं. 3-4 पर साइड के पल्लों को जोड़ लें और कुंदा मिलाकर मोहरी का नाप बराबर कर लें। उसके उपरान्त पांयचों का डिजायन बनायें, फिर गिदरी सींकर, नेफा को मोड़ लें।

मध्यम नाप की कमीज

(Medium Size Smock)

मध्यम नाप की कमीज मध्यम नाप की सलवार के साथ प्रयुक्त की जाती है।

कटिंग की नाप

नं. 1-2 = लम्बाई

नं. 1-3 = ¼छाती-2½

नं. 1-5 = कमर तक निचाई

नं. 3-4 = ¼छाती+4 सें.मी.

नं. 6-5 = 3-4 से 2 सें.मी. कम

नं. 2-7 = 3-4 के बराबर

नं. 7-8 = 3 सें.मी. बाहर

नं. 4-6-9 = साइड-शेप दें और नं. 9-8 सीधा मिलायें।

नं. 8-9 = 5" से 6" (चाक)

नं. 1-10 = ½तीरा

नं. 1-11 = 1½छाती

नं. 1-15 = 2 सें.मी.

नं. 10-12 = 2 सें.मी.

नं. 15-11 = गोलाई से मिलायें, (पिछला गला)

नं. 11-12 = तिरछा मिलायें, फिर नं. 12-13-4 पर पिछले और 12-14-4 पर सामने वाले मुड्ढे की शेप निकालें।

नं. 1-16 = 1½ छाती+1 सें.मी. लेकर नं. 16-17-11 पर गोलाई निकालें (सामने का गला)

नं. 18-19 = पर पीछे बटन पट्टी रखें।

नं. 20-21 = पर एक डॉट लगायें।

इसके बाद,

नं. 4-6-9 पर साइडों के दबाव और नं. 2-7-8 के नीचे हेम छोड़कर कटिंग कर दें।

टिप्पणी–

इस प्रकार की कमीज में भी मन पसन्द बांह लगाई जा सकती है, सिर्फ नाप में भिन्नता होगी, जबकि कटाई एक समान होगा।

गरारा तथा शरारा सूट
(Garara and Sharara Suit)

वर्तमान दौर में इस प्रकार का शूट लड़कियां बहुत पसन्द कर रही हैं। अतः यह आज काफी लोकप्रिय हो गया है। इन दोनों सूटों के ऊपर जो कुरती इस्तेमाल की जाती है, उसमें तथा अन्य सूटों के साथ इस्तेमाल की जाने वाली कुर्तियों की कटिंग में थोड़ा अन्तर अवश्य होता है। गरारे तथा शरारे के ऊपर इस्तेमाल की जाने वाली कुरती की बनावट में कुछ अन्तर रखा जाता है। यहां पहले बच्चियों की कुरती, उसके बाद क्रमशः उनके गरारे तथा शरारे की कटिंग के विषय में जानकारी दी जा रही है।

कुरती

अनुमानित नापः (6 वर्ष की आयु वाली लड़की हेतु)

लम्बाई = 50 सें.मी. रखें।

छाती = 58 सें.मी. रखें।

कमर = 55 सें.मी. रखें।

तीरा = सें.मी. रखें।

बांह की लम्बाई- (तीन चौथाई) 25 सें.मी.।

कटिंग

नं. 1-2 = लम्बाई (हिप रेखा से 4-6" नीचे)

नं. 1-3 = ¼छाती ½सें.मी. रखें।

नं. 3-4 = ¼छाती+4 सें.मी. रखें।

नं. 5-6 = 3-4 से 1 सें.मी. कम रखें।

नं. 7-8 = 2 सें.मी. बाहर रखें।

नं. 4-6-9-8 = साइड-शेप निकालें।

टिप्पणी : ड्राफ्ट में नं. 9-10-11 पर गोलाई दूसरी डिजाइन अथवा बनावट की कुरती के लिए अंकित की गई है।

नं. 1-12 = ½तीरा

नं. 1-13 = 1/12छाती

गरारा और शरारा दोनों सूटों के साथ आधी तथा गोल घेर वाली कुरती का ड्राफ्ट

नं. 1-17 = 1 सें.मी. रखें।

नं. 1-13 = 1/12 छाती+1 सें.मी. रखें।

नं. 17-13 = पिछले तथा नं. 19-18-13 सामने गले की गोलाई निकालें।

नं. 12-14 = 1½ सें.मी. रखें।

नं. 14-15 = 4 पिछले भाग में बटन पट्टी रखें।

नं. 2-7-8 के नीचे हेम छोड़कर नं. 8-9-6-4-15-14-13-17-18 पर पिछला भाग एवं नं. 4 से पृथक करके नं. 4-16-14-13-18-19 पर सामने वाले भाग की कटिंग करें।

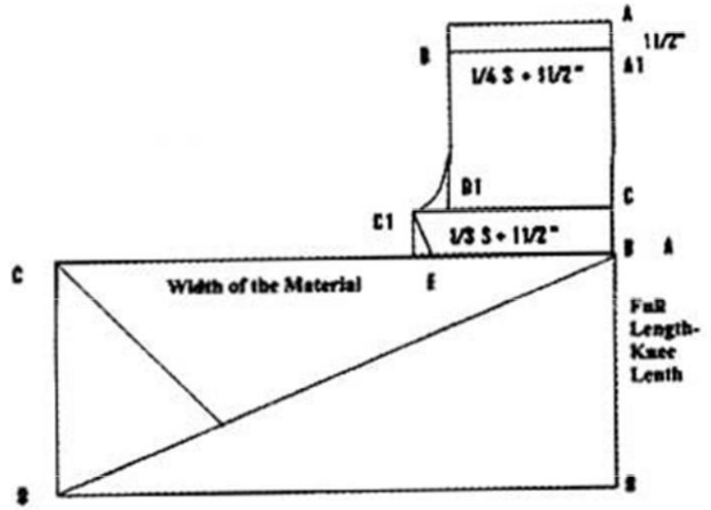

चित्र : गरारा एवं शरारा सूट

टिप्पणी : गरारा-सूट हेतु सादा कुरती तथा तीन चौथाई लंबाई की झालर वाली बांहों का निर्माण करें।

1. शरारा-सूट हेतु नं. 9-10-11-2 पर गोल घेर काट कर तथा नीचे पाइपिन लगाकर, गोल घेर वाली कुरती बनायें।
2. किसी भी कुरती के साथ बांहें सादा आधी या पूरी तैयार की जा सकती हैं, लेकिन मोहरी पर गोल कटाव वाली आधी बांह केवल गोल घेर वाली कुरती पर ही सुन्दर लगेंगी, जो कि शरारा-सूट के साथ अच्छी लगती हो।

3. शरारा अथवा गरारा-सूट के लिए कुरती बिना कॉलर वाली, सादा गले की ही तैयार करनी चाहिए। अगर कुरती के सामने गले पर गोटे-सलमे का काम अथवा कढ़ाई करना चाहें तो बटन पट्टी को पीछे की ओर रखें।
4. प्रत्येक कुरती के ऊपर गोटे-सलमे, कढ़ाई आदि की साज-सज्जा घेर तथा बांहों की मोहरी पर एक समान करनी चाहिए।
5. यदि छपाई या और छींट के कपड़े की कुरती तैयार हो तो गोल गले पर बटनपट्टी सामने की ओर आमने-सामने खुलती हुई रखें और एक तीन-चार लूप बनाकर, उसमें कपड़े में मढ़ें बटन टांक दें।

गरारा
(Garara)

अनुमानित नाप

लम्बाई = 65 सें.मी. रखें।

हिप = 60 सें.मी. रखें।

कटिंग

नं.1-2 = सम्पूर्ण लम्बाई

नं. 1-2 = 1-2 का बीच वाला हिस्सा या उससे 2 सें.मी. ऊपर चुन्नटों हेतु रखें।

नं. 1-3 = 1/3 हिप 3 सें.मी. (आसन) रखें।

नं. 1-9 = 1/4 कमर सें.मी. रखें।

नं. 3-4 = 1/3 हिप+8 सें.मी. रखें।

नं. 5-6 = 1-9 के बराबर लेकर नं. 64 गोलाई से मिलायें

नं. 5-7 = 5-6 का डबल (सात-आठ चुन्नटों के लिए)

फिर,

इसके बाद नं. 5-6-4-9-1 ऊपर नेफा के मोड़ हेतु अतिरिक्त लेकर, ऊपरी भाग तथा नं. 5-7-8-2 पर निचले घेर की कटिंग कर लें।

टिप्पणी : नं. 7-5 का भाग चुन्नटें देकर ऊपर भाग के नं. 5-6 से जोड़ें, फिर आसन तथा गिदरी को सीकर, नीचे महीन किनारा तुरप कर, ऊपर नेफा को मोड़ दें।

अनुमानित कपड़ा

इस पायजामें के लिए कम-से-कम 90 सें.मी. के पनहे वाला कपड़ा लिया जाता है, तो इसमें 1) लम्बाई पायजामा और मोहरी व नेफा मोड़ के लिए काटा जाता है।

दबाव और मोड़

नेफा में 5 सें.मी., साइड में 1.5 सें.मी. और मोहरी में 2 सें.मी. का दबाव रखा जाता है।

भाग

पायजामा के पांयचे 2 भाग, म्यानी के लिए 2 भाग।

सिलाई प्रक्रिया

1. दिये गये नाप के अनुसार ड्राफ्ट बना लें।

2. बनाये गये ड्राफ्ट के अनुसार पैटर्न बनाइए।

3. कपड़े को दुहरा मोड़ें और समतल स्थान पर रख दें। पैटर्न को कपड़े पर इस तरह रखें कि दोनों तरफ समान पैटर्न का ले आउट निर्मित हो। फिर उसी के अनुसार कपड़े की कटिंग कर लें।

4. दोनों साइडों के मध्य में म्यानी निकालिए।

5. कटे हुए भागों को सीधा काटें और म्यानी के भागों को आसन के साथ जोड़ दीजिए।

6. साइड की तरफ सिलाई करके दोनों पांयचे बनाइए।

7. नीचे पांयचों पर मोहरी मोड़कर सिल दें।

8. ऊपर नेफा के लिए कपड़ा मोड़कर सिलें।

9. फिनिशिंग करके प्रेस कर दें।

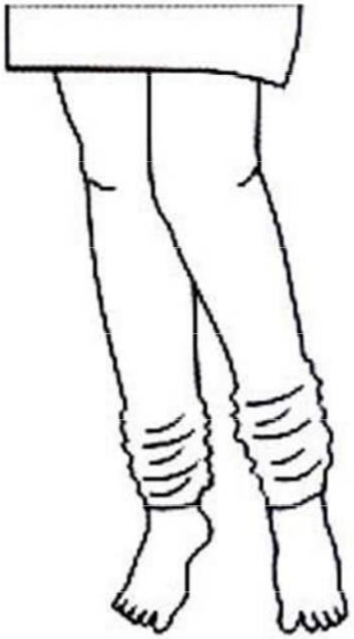

चित्र : चूड़ीदार पायजामा

ध्यान दें–

इसके लिए कपड़ा काटने या कपड़े पर पैटर्न रखने से पूर्व कपड़े को दोनों सिरों से जोड़कर थैली जैसा बना लें। इसके बाद कपड़े की जुड़ी हुई ओर से थैली की चौड़ाई सें.मी. नाप पर रखकर थैली को सिल दें। इस थैली पर पैटर्न रखकर कपड़ा काट लें।

सावधानियां
(Precaution)

1. यह पायजामा उरेब में तैयार करना चाहिए।
2. सिलाई आवश्यक खिंचाव के साथ करनी चाहिए।
3. नेफा और मोहरी मोड़ने में झोल नहीं आना चाहिए।

नाप

कूल्हे = 91 सें.मी. = 36 इंच
घुटना = 38 सें.मी. = 15 इंच

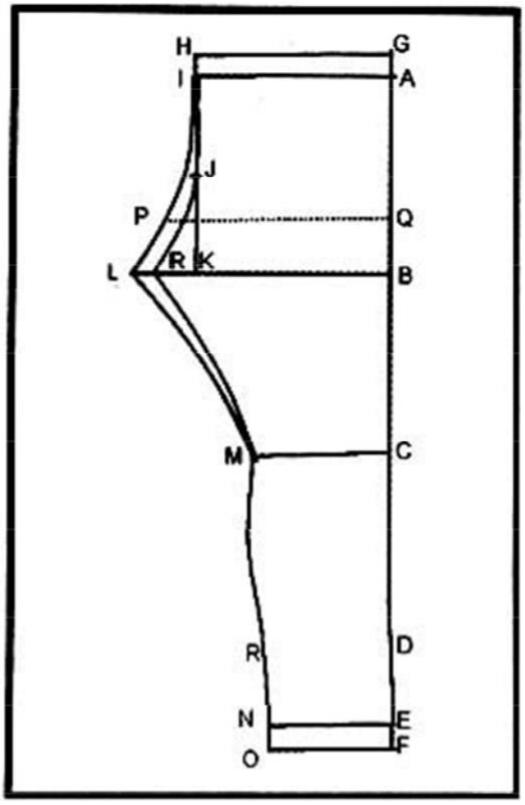

चित्र : चूड़ीदार पायजामा ड्राफ्ट

पिण्डली = 35 सें.मी. = 14 इंच

मोहरी = 30 सें.मी. = 12 इंच

कुल लम्बाई = 102 सें.मी. = 40 इंच

शेरवानी
(Sherwani)

शेरवानी पुरुषों द्वारा प्रयोग की जाने वाली मुसलमानी साम्राज्य की एक प्रचलित पोशाक है। शेरवानी का प्रचलन अलीगढ़ में सबसे अधिक है। यह अलीगढ़ के मुस्लिम विश्वविद्यालय की यूनिफॉर्म भी है। इसीलिए इसे अलीगढ़ी शेरवानी कहा जाता है। इसे अचकन के नाम से ही जाना जाता है। अचकन सभी पुरुषों को पसन्द है और किसी समय सबसे अधिक पहनी जाती थी। शेरवानी काले रंग की होती है। लेकिन अचकन अन्य रंगों की भी होती है।

गोटा और फीते (Tussels)

उन्नीसवीं सदी के अन्त तक तो शुद्ध सोने और चांदी के तारों को रेशमी धागे के साथ बुनकर गोटा तैयार किया जाता था। बाद में पीतल और अल्यूमीनियम के तारों पर सोने और चांदी की पॉलिश करके प्रयोग किया जाने लगा, अत: वजन में पर्याप्त भारी और मूल्य में काफी अधिक होता था यह गोटा। परन्तु अब तो विभिन्न प्रकार के सिन्थेटिक तारों और शुद्ध रेशम के स्थान पर कृत्रिम रेशम का प्रयोग होने के कारण पर्याप्त सस्ता है सोने और चांदी

के रंगों वाला यह गोटा। कई रंगों के धागों का प्रयोग करके फूल-पत्तियां, ज्यामितीय आकृतियां और पशु-पक्षी कढ़े हुए अनेक प्रकार के फीते भी आज बाजार में सर्वत्र सुलभ हैं। महिलाओं और बालकों के परिधानों में ही नहीं साड़ियों तक पर इन फीतों का खुलकर प्रयोग किया जाता है। परिधानों पर स्वतन्त्र रूप से तो फीतों को लगाया ही जाता है, सलमा-सितारे के काम और रिबनों के साथ इनका सन्तुलित प्रयोग करने पर तो परिधानों की शोभा और मूल्य कई गुना सहज ही बढ़ जाता है।

लेस अर्थात जाली (Lace)

रिबन और फीतों के विपरीत लेस चौथाई इंच से अट्ठारह इंच अथवा आधा मीटर तक चौड़ी होती है। इनके निर्माण में पर्याप्त मोटे धागों का प्रयोग होता है और सूती, रेशमी, नायलोन, टेरीकॉट और सन या जूट आदि लगभग सभी प्रकार के धागों का प्रयोग होता है। यद्यपि काली और सफेद लेस का प्रयोग ही अधिक होता है, वैसे यह लगभग सभी रंगों और अनेक डिजाइन की बुनावटों में मिलती है। जाल के समान ही इसको तैयार करते समय बीच-बीच में छिद्रों की श्रृंखलाएं होती हैं। गोल, चौकोर, छह पहलू के अण्डाकार और सितारों के समान पांच कोने वाले किसी भी आकार और नाप के ये छिद्र हो सकते हैं, परन्तु पूरी लेस पर एक ही आकार-प्रकार के छिद्र होते हैं। इन छिद्रों के कारण ही लेस के आर-पार सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है।

पतली अर्थात चौथाई से दो इंच तक चौड़ी लेस का प्रयोग रिबनों और फीतों के समान ही परिधानों पर सजावट करने के लिए किया जाता है। लैम्पशेड के निचले किनारों और सोफा कवर आदि पर जूट के चिकने चमकीले रेशों से बनी जूट लेस भी लगाई जाती है, तो दुपट्टों पर प्राय: सूती सफेद लेस ही अधिक लगाते हैं। अधिक चौड़ी लेस के परिधान भी बनाए जाते हैं। इस रूप में सम्पूर्ण परिधान तो मूल कपड़े का ही बनाया जाता है, परन्तु उसके सामने के हिस्से पर सम्पूर्ण भाग में अथवा मुड्ढों से कमर तक लेस भी लगा दी जाती है। इस रूप में लेस लगे हुए परिधानों के उस भाग में ऊपर होने के कारण लेस तो वस्त्र का कार्य करती है और वह मूल वस्त्र अस्तर बन जाता है। आधुनिकता

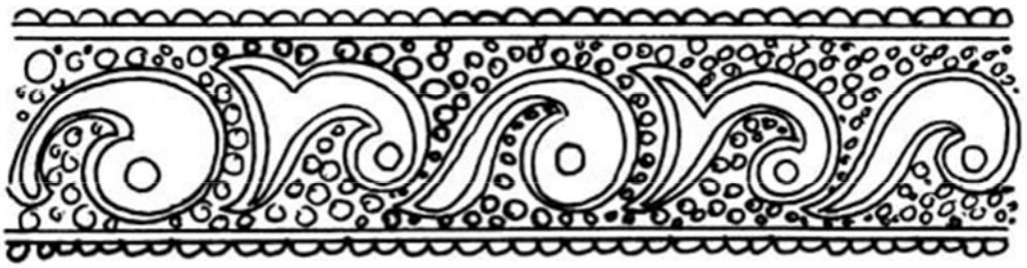

की चाह में अंग प्रदर्शन को जो सामाजिक स्वीकृति मिलती जा रही है, उसके फलस्वरूप युवतियों में लेस लगे हुए ब्लाउज और कुरते, स्कर्ट और फ्रॉकें जहां अधिक से अधिक प्रचलन में आ रहे हैं, वहीं इक्कीसवीं सदी तो शायद इस प्रकार के परिधानों की ही होगी।

कढ़ी हुई लेस (Shuttle Lace)

लेस में बड़ी-बड़ी जालियां होने के कारण इन्हें आधार के रूप में प्रयोग किए जाने वाले वस्त्र के ऊपर सीकर बीच-बीच में टांके भी लगाने पड़ते हैं। यही कारण है कि वस्त्र में लेस लगी होने का आभास देने के लिए कई बार एम्ब्रॉइडरी के समान ही कपड़े को सीने के पहले उस पर धागे द्वारा लेस की कढ़ाई भी करवा ली जाती है। यह कार्य आप एम्ब्रॉइडरी करने वालों से करवा सकते हैं। इसके साथ ही महिलाओं के परिधानों में प्रयोग किए जाने वाले सूती, रेशमी और सिन्थेटिक कुछ कपड़े ऐसे भी उपलब्ध हैं जिन पर लेस कढ़ी हुई होती है। वास्तव में लेस की इतनी अधिक किस्में तथा माप हैं कि इस क्षेत्र में चयन के लिए आपके पास एक विशाल क्षेत्र है और उससे भी अधिक विविधतापूर्ण हैं इनके उपयोग।

डोरियां अर्थात कॉर्ड्स (Cords)

पैजामे व अण्डर-वियर में नाड़े तथा गाउन बांधने की पेटी के रूप में तो सूती और रेशमी रस्सियों जैसी डोरियों का प्रयोग होता ही है, परिधानों की सुन्दरतावर्द्धन के लिए भी कई प्रकार से इनका प्रयोग किया जाता है। सूती, रेशमी, सूत और रेशम मिश्रित, नायलोन के पतले तारों और सूत के साथ नायलोन के तार मिश्रित ये डोरियां अनेक मोटाइयों की होती हैं। कृत्रिम गोटे के समान ही सोने और चांदी जैसी चमक-दमक वाली सिन्थेटिक धागों से बनी इस प्रकार की पतली डोरियां भी होती हैं। बड़े आकार के फैन्सी बटनों के लूप बनाने और गाउनों में बटनों के स्थान पर बांधने वाले फीतों के रूप में लगाने के लिए तो इनका प्रयोग किया ही जाता है, परिधानों पर इन्हें विभिन्न आकृतियों में टांका भी जाता है। फीतों और डोरियों के सम्मिलित प्रयोग द्वारा बनाई गई डिजाइनें अत्यन्त जीवन्त और मोहक होती हैं।

सोने-चांदी के रंग वाली जरी की और रंगीन व सफेद रेशमी पतली डोरियों का प्रयोग जहां परिधानों को सजाने के लिए होता है, वहीं परिधानों के आकार को स्थिर और किनारों पर कठोर और मोटा बनाने के लिए सूती अथवा सूत और नायलोन के तार मिश्रित डोरियों का प्रयोग किया जाता है। सोफों के कवरों और फोम के गद्दों के किनारों पर किनारे सीने के बाद अन्दर जोड़ के साथ यह डोरी रखकर एक सिलाई और की जाती है। इस कार्य के लिए पांच से सात मिलीमीटर मोटी सूती डोरियों का प्रयोग किया जाता है। ऊनी खादी अथवा रुएंदार ऊनी मुलायम कपड़े की जाकेटें और गाउन सीते समय भी सामने के दोनों हिस्सों पर कॉलर के जोड़ से लेकर नीचे तक कपड़े की दोनों तहों के मध्य इस प्रकार की कुछ पतली डोरियां लगाई जाती हैं। बालकों के फलालेन के कोटों में तो सामने के दोनों भागों और बांहों के अन्तिम किनारों पर पतली डोरियां अनिवार्य रूप से लगाते ही हैं, मुड्ढों के जोड़ों और सम्पूर्ण कॉलर के अन्दर भी डोरी लगा दी जाती है। वस्त्रों के अन्दर की ओर इस प्रकार की डोरियां लगाने के लिए कपड़े को ड्राफ्ट से

आधा इंच बड़ा काटा जाता है। वांछित स्थान पर पहले सामान्य सिलाई करने के बाद सिलाई और शेष बचे अतिरिक्त कपड़े की दोनों परतों के मध्य डोरी रखकर दूसरी सिलाई कर दी जाती है। दोनों सिलाइयों के मध्य डोरी एकदम कसी हुई अवस्था में रहती है और यही कारण है कि डोरी रखने के बाद मशीन में प्रेशर फुट के स्थान पर डोरी लगाने का हैमर लगाकर ही यह सिलाई की जाती है।

पाइपिंग (Piping)

महिलाओं और बालिकाओं के सामान्य परिधानों में सजावट के लिए प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं में शायद सबसे अधिक प्रयोग होने वाली वस्तु पाइपिंग ही है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सजावट के लिए प्रयोग की जाने वाली अन्य वस्तुएं जहां आप बाजार से खरीदते हैं, वहीं इसे आप स्वयं अपने यहां तैयार कर लेते हैं और वह भी कपड़ों की बेकार बची हुई कतरनों से। अधिकांश परिधानों में तो बनाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले कपड़े की पाइपिंग बनाकर ही लगाई जाती है, जबकि कभी-कभी मैच करते हुए दूसरे रंग की पाइपिंग भी लगा लेते हैं। गत अध्याय में बड़े फैन्सी बटनों को लगाने के लिए रोलियन बटन होल लूप हेतु हम जो पट्टी बनाते हैं वह भी वास्तव में पाइपिंग ही है।

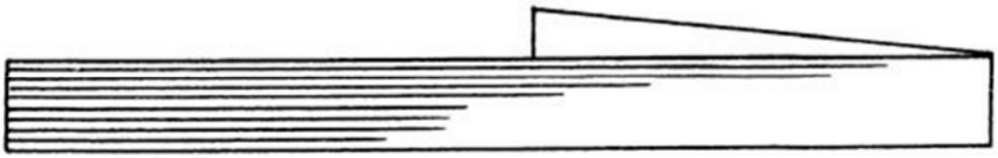

पाइपिंग बनाने के लिए प्राय: पौन अथवा एक इंच (20 or 25 mm) चौड़ी कपड़े की पट्टियों का प्रयोग किया जाता है। वैसे तैयार पाइपिंग की चौड़ाई के दो गुने से कुछ अधिक चौड़ी ही होती है, यह पट्टी, अत: इसकी चौड़ाई कुछ भी हो सकती है। कपड़े की लम्बाई अथवा चौड़ाई में निकाली गई पट्टी की अपेक्षा उरेब कटाव अथवा टाई की तरह तिरछे कटे हुए कपड़े की पाइपिंग अधिक अच्छी बनती है। इसके लिए सबसे अच्छा तो वर्गाकार कपड़े का प्रयोग रहता है। कपड़े को चौरस फैलाकर उसके एक कोने को तीसरे कोने पर इस प्रकार रखते हैं कि उसका एक त्रिभुज बन जाए। इस त्रिभुज के जुड़े हुए भाग से अन्तिम किनारे तक वांछित चौड़ाई के अन्तर पर सीधी लाइनें खींचने के बाद उसे पट्टियों के रूप में काट लिया जाता है। जहां तक कम मात्रा में पाइपिंग तैयार करने का प्रश्न है, कतरन के रूप में बेकार बची तिरछी पट्टियों और छोटे टुकड़ों को काटकर ही इस प्रकार की पट्टियां तैयार कर ली जाती हैं।

तिरछी कटी हुई इन पट्टियों के दोनों सिरे त्रिभुजाकार होते हैं। इन्हें इस प्रकार काट दिया जाता है कि दोनों सिरे चौरस हो जाएं। लम्बी पाइपिंग लगाने के लिए इन दो पट्टियों के सिरों को एक साथ जोड़कर लम्बी पट्टियां तैयार की जा सकती हैं, वैसे अधिकांश परिधानों में छोटी पट्टियां ही लगती हैं। इन पट्टियों को चौड़ाई में बीच से मोड़कर दूसरे किनारे पर सीने के बाद भी परिधानों में लगाया जा सकता है, वैसे दक्ष कारीगर परिधान के साथ जोड़ते समय ही मोड़कर सिलाई करते जाते हैं। महिलाओं के कुरतों, फ्रॉकों व ब्लाउजों में बांहों के अन्तिम सिरों पर और कॉलर के स्थान पर तो प्राय: पाइपिंग लगाई ही जाती है, कभी-कभी मुड्ढों के जोड़ पर भी पाइपिंग अतिरिक्त रूप में लगा दी जाती है। बांहों के अन्तिम भाग में लगी हुई पाइपिंग तो सुन्दरता के साथ ही उस भाग को अधिक मजबूती भी प्रदान करती है और यही कारण है कि छोटे बालकों के झबलों आदि में तो इसे अनिवार्य रूप से लगाते ही हैं, पतले कपड़ों से बने महिलाओं और बालकों के अधिकांश परिधानों में भी इसका प्रयोग करते ही हैं।

यहीं नहीं पाइपिंग की पट्टी को मध्य भाग से मोड़कर और उसमें पतली सूती डोरी रखकर डोरी के साथ सिलाई करने के बाद भी इसे लगाया जाता है। तकनीकी भाषा में इसे कार्डिड पाइपिंग अर्थात डोरीयुक्त पाइपिंग कहा जाता है। इसी प्रकार तोते की चोंच जैसी नोकें निकली हुई पाइपिंग बनाकर भी परिधानों में लगाई जाती है। सामान्य पाइपिंग को चुन्नटें डालकर परिधान के घेर के निचले भाग में और बांहों के अन्तिम सिरों पर लगाने पर उसकी शोभा कई गुना बढ़ जाती है। ढीलदार रूप में लगी इस पाइपिंग को रोलियो पाइपिंग कहा जाता है। वैसे स्वयं पाइपिंग बनाने और उसे परिधानों पर लगाने का कार्य इतना आम है कि लगभग प्रत्येक गृहिणी इस बारे में पर्याप्त जानकारियां रखती ही है।

सलमा-सितारे और जरी

जरी का काम पहले तो बहुत महंगा पड़ता था और सितारे भी सोने-चांदी के बनाए जाते थे। परन्तु अब ये सभी वस्तुएं रासायनिक धागों और चमकदार प्लास्टिक की पतली शीटों की बनाई जाती हैं अत: बेहद सस्ती हैं। इसी प्रकार छोटे नकली मोतियों, विभिन्न आकृतियों की सुनहरी बिन्दियों और फैन्सी बटनों से भी परिधानों पर सजावट की जाती है। इन्हें केवल हाथ से ही टांका जा सकता है। पतली और छोटी हाथ की सुई और पतले सफेद रेशमी धागों का प्रयोग ही इन्हें टांकने के लिए किया जाता है। वैसे इनका प्रयोग विशिष्ट शुभ अवसरों और त्योहारों पर महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले परम्परागत परिधानों में ही अधिक किया जाता है।

छोटे-छोटे शीशे (Glasses)

मुंह देखने वाले शीशों के समान ही पॉलिश किए हुए पतले शीशे के छोटे-छोटे गोलाकर टुकड़े परिधानों में टांकना एक विशिष्ट कला है। यह परम्परागत भारतीय लोककला आज नवीनतम फैशन का रूप धारण करती जा रही है। विभिन्न साइजों और आकृतियों में कटे हुए ये शीशे जरी और सलमा-सितारे बेचने वालों के यहां मिल जाते हैं। मोतियों और सितारों के समान ही वस्त्र पर पेन्सिल से आकृतियां बनाने के बाद सुई-धागे की सहायता से इन्हें मढ़ा जाता है। कपड़े के ऊपर काज बनाने के टांकों द्वारा एक-एक शीशे को उसके चारों ओर जाल-सा बनाकर मढ़ा जाता है और यही कारण है कि बहुत अधिक श्रम और समय लगता है इस कार्य में। फीतों के समान ही अब पट्टियों के रूप में मढ़े हुए शीशे भी मिलने लगे हैं, जिन्हें लेस और गोटे के समान ही वस्त्रों पर टांका जा सकता है। वैसे एम्ब्रॉइडरी और चिकन के कार्य के समान ही सलमा-सितारे और शीशे लगाने का कार्य भी अपने आप में पूर्ण कलाएं हैं और टेलर्स नहीं, अन्य व्यक्तियों द्वारा ही ये कार्य किए जाते हैं।

रूई तथा फोम (Foam)

ऊनी कोटों और मोटी जाकेटों में तो सामने की तरफ अस्तर और मुख्य कपड़े के मध्य बुकरम और रूई जैसी वस्तुएं लगाई ही जाती हैं, वस्त्रों में सजावट के उद्देश्य से भी इनका प्रयोग किया जाता है। बुकरम लगा देने पर परिधान का वह भाग सीधा खड़ा रहता है और वहां पर्याप्त उभार भी रहता है अत: छोटे बालकों के कुछ कपड़ों में भी इसे लगाया जाता है। परन्तु जहां तक महिलाओं और बच्चों के परिधानों को विशिष्ट सज्जा देने का प्रश्न है प्राय: ही एक सूत से चार सूत या आधा इंच तक मोटे फोम का प्रयोग किया जाता है। फोम का वांछित आकार का टुकड़ा और उससे कुछ ही बड़ा अस्तर लेकर इन्हें परिधान में अन्दर की तरफ सी दिया जाता है। इसके बाद मशीन में क्विल्टिंग इक्विपमेन्ट लगाकर काफी दूर-दूर टांके लगाए जाते हैं। जहां टांके होते हैं, वहां धागे के खिंचाव द्वारा फोम एकदम दब जाता है और शेष भागों में ऊंचा रहता है। इस प्रकार परिधान के उस भाग में अनेक छोटे-छोटे उभार बन जाते हैं।

इसके बाद फ्लैप के मुड़े हुए कपड़े पर इस प्रकार बखिया लगाइए कि बुकरम सिलाई में न आए। यदि इस बखिया के बगल में ही दूसरी बखिया इस प्रकार लगा दी जाए कि बुकरम और अस्तर भी सिलाई में आ जाए तब फ्लैप अधिक मजबूत और सुरक्षित तो रहता है, परन्तु पूरा खोलने पर परिधान के कपड़े की उस सतह पर अधिक खिंचाव भी पड़ता है। यही कारण है कि मोटे ऊनी रुएंदार कपड़े की अस्तर वाली जर्सियों की पैच पॉकेटों पर तो डबल सिलाई करके प्लैप जोड़ते हैं, जबकि कमीज-पैन्ट आदि के फ्लैपों पर एक सिलाई तो करते ही हैं, बीच में बुकरम भी प्राय: नहीं लगाते। जहां तक फ्लैप के जेब के ऊपर आने वाले निचले भाग की आकृति का प्रश्न है, जेब की नीचे की आकृति के अनुरूप ही रखी जाती है। कोट की साइड तथा पैन्ट की बैक पॉकेट पर भी इसी लिए गोल किनारों वाले फ्लैप ही लगाए जाते हैं। जब जेब नीचे से भी चौकोर अथवा चौरस होती है तब या तो थोड़ा अधिक बड़ा चौरस फ्लैप लगाते हैं अथवा दोनों कोनों और मध्य भाग में नोकें निकला हुआ फ्लैप। इस प्रकार के फ्लैप पर कोने की दोनों नोकों पर तो टिच बटन लगाए जाते हैं। बीच में मध्यम नाप का साधारण बटन अथवा पीतल का बटन जेब पर लगाकर फ्लैप के बीच के नुकीले हिस्से में काज बना दिया जाता है।

सेफ पॉकेट (Safe Pocket)

यद्यपि फ्लैप लगी हुई सभी पैच पॉकेटों को सेफ पॉकेट भी कह दिया जाता है, परन्तु सैनिक और अर्द्धसैनिक बलों की ऊनी जर्सियों और चैस्टरों में लगाई जाने वाली अस्तरयुक्त यह फ्लैप पॉकेट ही सेफ पॉकेट कहलाने की अधिकारी है। इसमें पॉकेट और फ्लैप की सम्पूर्ण सतह पर अस्तर तो लगाया ही जाता है, फ्लैप और अस्तर एक ही कपड़े के टुकड़े का होता है। यही कारण है कि इसे सिंगल पीस फ्लैप पॉकेट भी कहा जाता है। सम्पूर्ण सतह पर अस्तर और कभी-कभी अस्तर के साथ ही बुकरम लगा होने के कारण यह खाली पॉकेट भी काफी मोटी होती है, परन्तु इसमें रखी वस्तुएं ही नहीं, जैकेट अथवा चैस्टर का मूल कपड़ा भी सुरक्षित रहता है। परिधान पर से जब यह पॉकेट उधेड़कर निकाल दी जाती है, तब उस स्थान का मूल कपड़ा नए जैसा निकलता है क्योंकि जेब में रखी जाने वाली वस्तुएं अस्तर और जेब के कपड़े के बीच में रहती हैं।

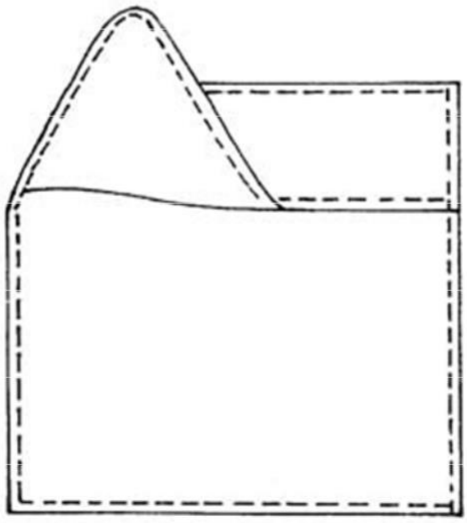

सेफ पॉकेट की एक दो टुकड़ों में निकली जेब और उसका फ्लैप

इसमें पॉकेट और फ्लैप के संयुक्त नाप से दबाव के लिए अतिरिक्त कपड़ा रखकर अस्तर और कपड़े के टुकड़े काटे जाते हैं। जेब के मुंह के स्थान से आधा सेण्टीमीटर ऊपर अस्तर पर एक सीधी लाइन खींच ली जाती है। मूल

कपड़े की उल्टी साइड में अस्तर को उल्टा रखकर इस निशान के नीचे से जेब को तीनों तरफ से सी देते हैं। बखिया लगाने के बाद इसे उलट दिया जाता है। अस्तर में लगाए गए निशान पर सीधा काट लिया जाता है, परन्तु केवल अस्तर ही काटते हैं, मुख्य कपड़ा जुड़ा ही रहता है। फ्लैप के कपड़े और अस्तर को थोड़ा-थोड़ा अन्दर की तरफ मोड़कर दोनों साइडों और खुले हुए हिस्से पर बखिया कर ली जाती है। कपड़े की जिस दिशा में जेब का अस्तर लगाया जाता है उसकी दूसरी दिशा में फ्लैप का अस्तर जोड़ा जाता है।

पॉकेट के मुंह पर आधा सेण्टीमीटर अस्तर को अन्दर की तरफ मोड़कर परिधान के साथ इसकी तुरपाई कर दी जाती है। तत्पश्चात पॉकेट को तीनों तरफ से परिधान के साथ बखिया कर देते हैं और प्राय: ही इकहरी के स्थान पर मोटी दोहरी बखिया की जाती है। जिस स्थान पर फ्लैप मोड़ा जाता है वहां भी पॉकेट के कपड़े को परिधान के साथ बखिया द्वारा जोड़ दिया जाता है। यह बखिया दिखलाई नहीं देती अत: इसके कुछ ऊपर से फ्लैप को पलटकर और अस्तर साथ में रखकर एक बखिया और कर देते हैं। वैसे इस प्रकार की पॉकेटें सैनिकों की ड्रेसों में ही अधिक चलती हैं, अधिकांश कपड़ों पर तो जेब और फ्लैप अलग-अलग बनाकर ही लगाए जाते हैं और जेबों में प्राय: अंस्तर भी नहीं लगाया जाता।

कट पॉकेट (Cut Pocket)

पैन्ट, निक्कर और कुरतों की बगल में लगाए जाने के कारण ही इसे साइड पॉकेट (Side Pocket) भी कहा जाता है। पैन्ट, निक्कर, जीन्स, पैजामे, सलवार आदि में इसे कमर से कुछ नीचे पांयचों की सिलाई के जोड़ों के मध्य में लगाते हैं। कुरते में भी इसे कमर के पास दोनों साइडों में लगाते हैं और इसे लगाने के स्थान से नीचे सिलाई भी नहीं करते। पुरुषों के कोट की सभी जेबें इस रूप में ही लगाई जाती हैं परन्तु वहां लगाते समय परिधान में उस स्थान पर पॉकेट के मुंह के लिए चीरा भी लगाना पड़ता है। लट्ठे, पॉपलीन अथवा अस्तर के कपड़े में से इस पॉकेट को पहले एक थैली के रूप में सीकर तैयार किया जाता है। जोड़ के स्थान पर सिलाई करते समय कपड़े के उस भाग को परस्पर मिलाकर नहीं सीते बल्कि दोनों हिस्सों के साथ जेब के मुंह के एक-एक परदे को सी दिया जाता है। पॉकेट को सीने के बाद उसके मुंह के दोनों कपड़ों को लगाए जाने वाले परिधान के जोड़ के हिसाब से काट लिया जाता है। कोट, पैन्ट, निक्कर और अधिकांश पैजामों में इसे इसी रूप में लगाया जाता है परन्तु कुरतों की साइड में और कुछ पैजामों में इसे थोड़े परिवर्तित रूप में भी लगाते हैं।

लिंक पॉकेट (Link Pocket)

अधिकांश व्यक्ति तो उपरोक्त साइड पॉकेटों को भी लिंक पॉकेट कह देते हैं। यद्यपि लिंक पॉकेट भी थैली के रूप में सी जाती है, परन्तु इसे काटने और परिधान में लगाने का तरीका थोड़ा भिन्न है। इस पॉकेट का एक परदा या पल्ला तो जेब के नाप का ही होता है, परन्तु दूसरा इतना लम्बा रखा जाता है कि वह जेब में हाथ डालने के स्थान से कुछ ऊपर तक रहे। दोनों टुकड़ों को नीचे और दोनों ओर सिलाई करके जोड़ने के बाद बड़े कपड़े को त्रिभुजाकार काट लेते हैं। परिधान के जोड़ पर जेब के स्थान पर सिलाई करने के स्थान पर दोनों हिस्सों को अलग-अलग मोड़कर तुरपाई कर ली जाती है।

कट पॉकेट में तो जेब की थैली के दोनों परदों को परिधान की सिलाई के साथ सिला जाता है परन्तु इसे सिलाई करने के बाद लगाया जाता है। पॉकेट के छोटे परदे को जेब के निचले किनारे के साथ आड़ा सीते हैं अर्थात दोनों परदों पर इस प्रकार सीते हैं कि पॉकेट का आधा-आधा कपड़ा दोनों हिस्सों पर आए। लम्बे परदे को इस स्थान से दोनों तरफ से तिरछा काटकर त्रिभुज का रूप दे दिया जाता है। इस त्रिभुज का नुकीला भाग परिधान के जेब के मुंह से एकांध सेण्टीमीटर ऊंचा ही रहता है। इसे हाथ से तुरपाई करके परिधान के साथ जोड़ दिया जाता है। इस सम्पूर्ण

कट-पॉकेट

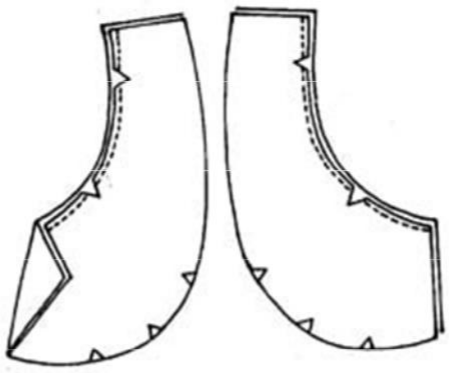

तिरछी अटैच्ड पॉकेट का ड्राफ्ट

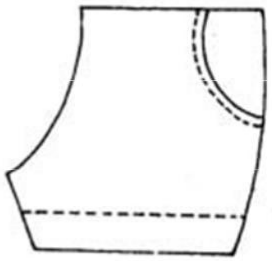

निक्कर और पैंटों की कट पॉकेट

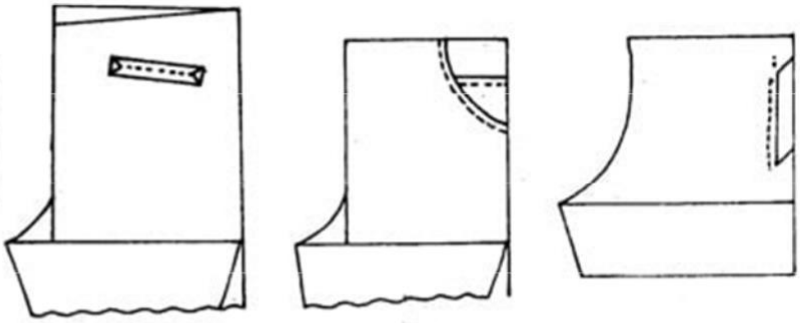

साइड पॉकेटों के ड्राफ्ट

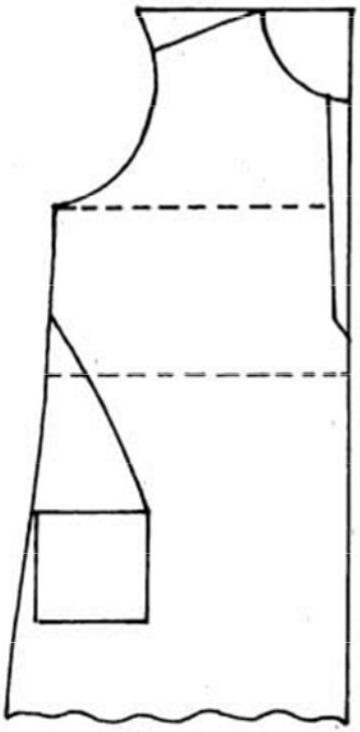

कुरते की साइड लिंक पॉकेट

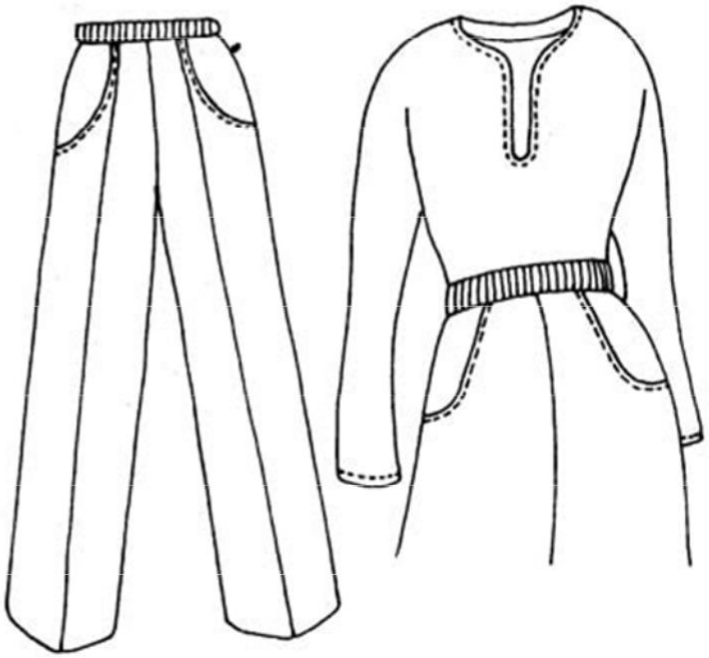

पैन्ट और मैक्सी की तिरछी अटैच्ड पॉकेट

त्रिभुज के दोनों साइडों की सिलाई परिधान के दोनों पल्लों के साथ की जाती है जबकि नोक दोनों हिस्सों की सिलाई के जोड़ पर आती है। आमतौर पर हाथ के कुरतों और अधिक घेर के पैजामों में बड़े आकार की पॉकेट ही इस विधि से लगाई जाती हैं, अधिकतर तो साइड जेबें कट पॉकेटों के तरीके से ही लगा दी जाती हैं।

तिरछी अटैच्ड पॉकेट (Attached Pocket)

बैलबॉटम, जीन्स, लेडीज पैन्ट में अधिकतर और लड़कों की पैन्ट और निक्कर में कभी-कभी साइड पॉकेट के स्थान पर सामने की ओर तिरछे मुंह की अटैच्ड पॉकेट भी लगाई जाती हैं। इनका मुंह सामने की तरफ बेल्ट के नीचे से पांयचों की सिलाई के जोड़ के पास तक घुमावदार रूप में कटा हुआ होता है। साइड पॉकेटों से छोटी तो ये पॉकेटें होती ही हैं, थोड़ा अधिक सामान रखते ही फूलकर भद्दी भी लगती हैं और बैठते समय वह समान कई बार असुविधा का कारण भी बन जाता है। कट पॉकेटों के समान ही परिधान के कपड़े में घुमावदार कटाव देकर इनके लिए जेब के मुंह का स्थान बनाया जाता है। पैन्ट या निक्कर के इस तिरछे कटाव की निचली सतह को थोड़ा मोड़कर उसके साथ पॉकेट के मुंह के एक परदे को सी दिया जाता है। पॉकेट का दूसरा परदा परिधान के कटाव की ऊपरी सतह के साथ जोड़ा जाता है। इन जोड़ों के स्थान पर अस्तर नजर आने पर भद्दा लगेगा। अत: उन स्थानों पर ही इस प्रकार की जेबें लगाई जा सकती हैं, जहां काफी बड़ी प्लीट हो, क्योंकि यह प्लीट का अतिरिक्त कपड़ा ही तो इस कमी को छिपाता है।

पृष्ठ 264 पर प्रदर्शित तिरछी अटैच्ड पॉकेट की थैली के दोनों परदों को ध्यान से देखिए। दाहिनी पट्टी पर ऊपर तीन पट्टियां मुंह का निशान प्रदर्शित कर रही हैं। दोनों ही पल्लों पर त्रिभुजाकार नॉच या छोटे कटाव जोड़कर पलटने पर घुमाव को सही रखते हैं। कई बार इस पॉकेट को नीचे से इस प्रकार चन्द्राकार बनाने के स्थान पर चौरस भी बना लिया जाता है, परन्तु अधिक बड़ी नहीं बनाई जातीं इस प्रकार की तिरछी अटैच्ड पॉकेटें।

जेटेड पॉकेट (Jetted Pockets)

साइड पॉकेटों के समान ही जेब को थैली के रूप में सीकर और परिधान में चीरा लगाकर जोड़ी जाने वाली सभी जेबें इस वर्ग के अन्तर्गत आती हैं। यद्यपि साइड पॉकेटों को भी कुछ व्यक्ति कट पॉकेट कहते हैं, परन्तु वास्तव में तो कट पॉकेट यही जेबें हैं क्योंकि जेब का मुंह बनाने और अस्तर के साथ जेब की थैली जोड़ने के लिए परिधान पर चीरा अर्थात कट लगाना ही पड़ता है। पुरुषों के कोट, जाकेट और अन्य वस्त्रों पर इनका मुंह पैच पॉकेट की तरह भूमि के समानान्तर रखा जाता है। इस प्रकार के सीधे मुंह वाली कट पॉकेटों को वर्टिकल (Vertical) जेटेड पॉकेट कहा जाता है। महिलाओं के कोटों, गाउनों, नाइट ड्रेसों और डॉक्टरों के कोटों आदि में इनका मुंह तिरछा रखा जाता है। इन्हें स्लान्टिंग कट पॉकेट (Slanting Cut Pocket) कहा जाता है। अचकनों में अनिवार्य रूप से और चैस्टरों तथा जाकेटों में कभी-कभी इनका मुंह खड़ी हुई अवस्था में भी रखा जाता है। पैन्ट की साइड पॉकेट के समान खड़े मुंह की इन जेबों को हॉरीजेन्टल (Horizental) कट पॉकेट कहा जाता है।

तीनों ही प्रकार की इन पॉकेटों के लिए जेबों की थैलियां तैयार करने की विधि समान ही है। वर्टिकल और स्लांटिंग पॉकेटों की थैलियां तीन ओर से सीकर उलट ली जाती हैं और ऊपर की तरफ मुंह खुला रखते हैं। हॉरीजेन्टल पॉकेट की थैली ऊपर-नीचे और एक साइड में पूरी सीते हैं और दूसरी साइड को सीते समय लम्बाई में ऊपर की तरफ मुंह के लिए खुला स्थान छोड़ देते हैं। परिधान में अस्तर लगा होने पर तो थैली सीने के बाद उलटते भी नहीं क्योंकि थैली अस्तर और मुख्य कपड़े के मध्य छिपी रहती है। परिधानों में इन जेबों के मुंह वर्टिकल और स्लान्टिंग में तो वास्तविक स्थान से एक सेण्टीमीटर नीचे तथा हॉरीजेन्टल में इतना ही आगे काटे जाते हैं। थैली के पिछले परदे को इस अधिक लम्बे कटे हुए कपड़े के साथ जोड़ने के बाद दूसरे परदे को छोटे अर्थात निचले या

36

लेडीज नाइट सूट

LADIES NIGHT SUIT

नाइटी महिलाओं का विशिष्ट रात्रि परिधान है, परन्तु जिस प्रकार कुछ युवतियां लड़कों के समान ही दिन में जीन्स और टीशर्ट पहनती हैं, ठीक उसी प्रकार रात्रि को बुशर्ट और पैजामा पहनना पसन्द करती हैं। इन दोनों को एक ही कपड़े का बनाया जाता है और एक सामान्य वयस्क महिला के इस पूरे सूट में एक गज अर्ज का चार मीटर से सवा चार मीटर के मध्य कपड़ा लगता है।

पुरुषों के पैजामे के समान ही महिलाओं के पैजामे का ले-आउट तैयार किया जाता है, परन्तु एक बड़ा अन्तर है। महिलाओं के पैर पुरुषों की अपेक्षा काफी कम लम्बे होते हैं, जबकि कूल्हा पर्याप्त भारी। यही कारण है कि सवा पांच फुट लम्बी महिला के पैजामे की लम्बाई तो अड़तीस-उनतालीस इंच रखी जाती है परन्तु सीट छत्तीस से चालीस इंच तक होती है। पैजामे में नेफा लगाया जाता है और इसके लिए पांच सेन्टीमीटर तथा नीचे पांयचों पर मोड़ने के लिए तीन से पांच सेन्टीमीटर कपड़ा अतिरिक्त लिया जाता है।

नाइट सूट की शर्ट आगे से पूरी खुलने वाली बुशर्ट के रूप में तैयार की जाती है। इसमें सामान्य रूप से आगे के दोनों परदों पर पांच से सात सेन्टीमीटर की फेसिंग लगाकर और गरदन के नीचे से उलटकर कोट कॉलर का रूप दे दिया जाता है। यदि टेनिस कॉलर अथवा अन्य कोई कॉलर लगाते हैं तब तीन सेन्टीमीटर की फेसिंग देना ही पर्याप्त रहता है क्योंकि अन्दर को मुड़ी हुई यह फेसिंग बटन पट्टी और काज पट्टी का काम देती है।

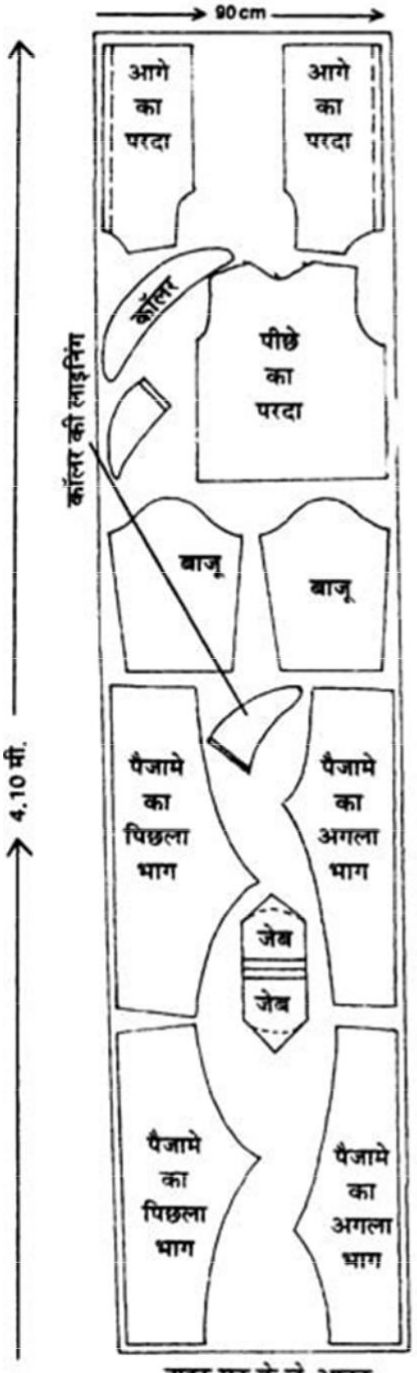

नाइट सूट के ले-आउट

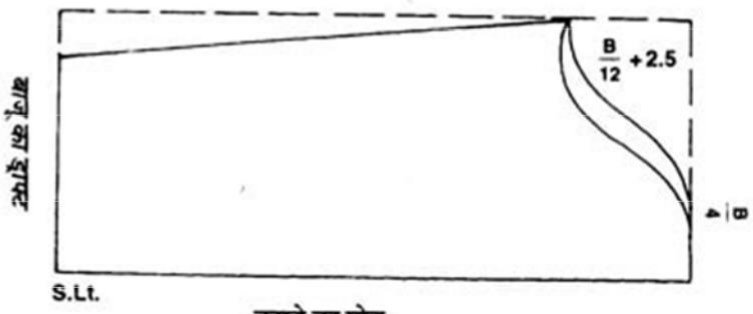

कपड़े का मोड़

लेडीज नाइट सूट का ड्राफ्ट

जैसा कि आप इस ड्राफ्ट में देख रहे हैं, बुशर्ट में कमर, पैर और कन्धे पर केवल एक-एक डार्ट ही दिया गया है तथा मुड्ढे पर और साइड में कोई डार्ट नहीं दिया गया है। इसका कारण यह है कि सीने पर थोड़ी और कमर पर काफी अधिक ढीली यह बुशर्ट तैयार की जाती है। कमर पर ढीली तैयार की जाने के कारण ही इस बुशर्ट का पूरा ड्राफ्ट सीने के नाप (Bust) पर ही आधारित है। इसी प्रकार पैजामे का पूरा ड्राफ्ट भी केवल हिप नाप पर ही आधारित है। यही कारण है कि अत्यन्त सुगम है इस नाइट सूट को तैयार करना।

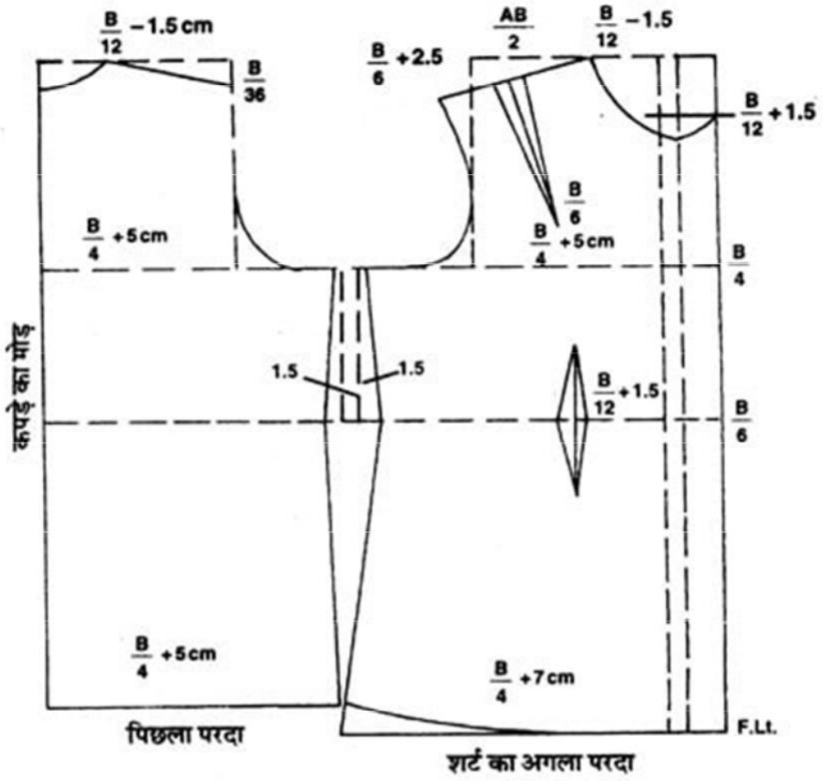

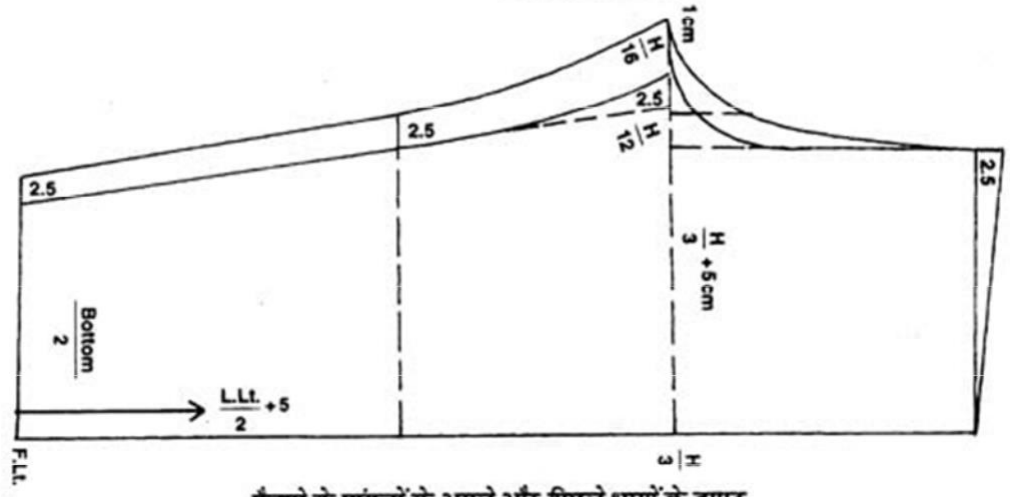

पैजामे के पांयचों के अगले और पिछले भागों के ड्राफ्ट

❑❑

37. महिलाओं के गाउन
LADIES GOWNS

पुरुष तो जाड़ों में सुबह-शाम घर से बाहर जाते समय गाउन पहनते हैं, परन्तु महिलाएं इसे रात्रि परिधान के रूप में, सम्पूर्ण शृंगार करते समय वास्तविक वस्त्र पहनने से पहले अथवा घर पर आराम करते समय पहनती हैं। यही कारण है कि पुरुषों के गाउन जहां अस्तर लगाकर ऊनी कपड़े के बनाए जाते हैं, वहीं महिलाओं के लिए इन्हें पॉपलीन, रूबिया, टेरीकॉट के सामान्य रंगीन अथवा चैक आदि के कपड़ों से तैयार किया जाता है।

गाउन तैयार करने के लिए छाती (Bust) का नाप और कन्धे से पिण्डली तक की लम्बाई के नाप ही चाहिए। कमर पर ये पर्याप्त ढीले रखे जाते हैं और नीचे तो इनकी चौड़ाई छाती नाप के आधे से आठ दस इंच तक अधिक रखी जाती है। इनका पिछला परदा तो पूरा होता है परन्तु आगे के दो परदे अलग-अलग तैयार किए जाते हैं। इन दोनों परदों में दो-ढाई इंच की फेसिंग भी दी जाती है और सीने के ऊपर से कन्धे के जोड़ तक यह फेसिंग ही कॉलर के रूप में पलट दी जाती है।

हमारे देश में महिलाओं की लम्बाई सवा पांच फुट के लगभग होती है अत: प्राय: ही तिरपन से पचपन इंच लम्बे ये गाउन बनाए जाते हैं और इनमें सोलह इंच के लगभग लम्बी बांहें लगाई जाती हैं। दोनों बांहों और आगे-पीछे के परदों के अतिरिक्त पिछले परदे पर कॉलर के रूप में लगाने के लिए एक पट्टी ही आपको और चाहिए। जहां तक कपड़े का प्रश्न है पचासी से नब्बे सेन्टीमीटर अंर्ज को दो लम्बाई गाउन और एक लम्बाई बाजू कपड़ा लगता है। गाउनों में बटन प्राय: नहीं लगाए जाते या तो इन्हें बांधने के लिए कमर पर चार-पांच सेन्टीमीटर चौड़ी बेल्ट लगा लेते हैं या फिर साधारण डोरी से बांधा जाता है।

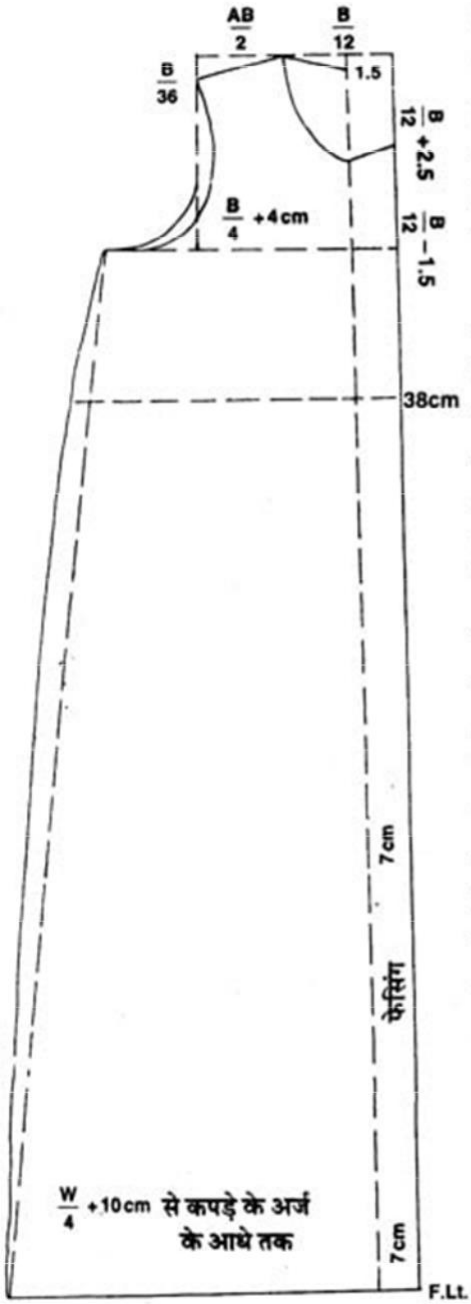

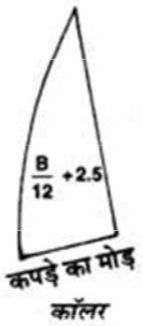

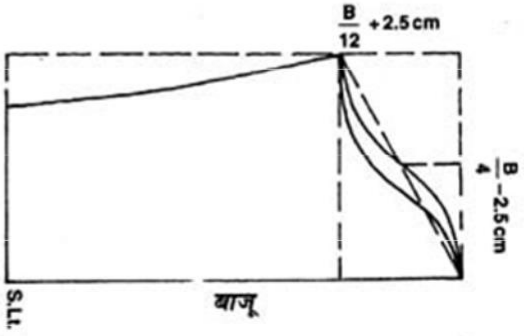

❑❑

आओ कटाई-सिलाई सीखें और सिखाएं

हो नीचे घर में भी यदि आप चाहे तो झालर लगा